

नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग - Ph./Fax: 07152-252651 मो. 9960562305

ई-मेल: mgahvpro@gmail.com वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विश्वविद्यालय में 'संस्कृत की प्रासंगिकता, संभावनाएं' पर राष्ट्रीय परिचर्चा का समापन

वर्धा, दि. 12 फरवरी 2018 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं संस्कृत भारती, वर्धा की ओर से 'संस्कृत की प्रासंगिकता एवं संभावनाएं' विषय पर रविवार 12 फरवरी को आयोजित राष्ट्रीय परिचर्चा का समापन प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा की उपस्थिति में गालिब सभागार में किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति प्रो. रमेशचंद्र पण्डा, मुख्य अतिथि के रूप में वर्धा के विधायक डॉ. पंकज भोयर, विशेष अतिथि के रूप में संस्कृत भारती के विदर्भ प्रांत मंत्री श्रीनिवास



वर्णेकर, वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. हरिमोहन बुधोलिया, संस्कृत विभाग के प्रभारी अध्यक्ष लेखराम दन्नाना मंचासीन थे।

प्रो. रमेशचंद्र पण्डा ने मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि संस्कृत भाषा ही नहीं अपितु एक विषय भी है। हम जैसा लिखते हैं वैसा उच्चारण करते हैं। इससे कई रोगों से मुक्ति मिल सकती है। स्वास्थ्य लाभ के लिए इस भाषा का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने कहा कि संस्कृत की प्रासंगिकता है और योग भी संस्कृत से उपजा है। उन्होंने आह्वान किया कि कर्मकांड से ऊपर उठकर इस भाषा की ओर देखा जाना चाहिए।

वर्धा के विधायक डॉ. पंकज भोयर ने कहा कि आने वाली पीढ़ी को संस्कृत सीखाना चाहिए। भारतीय संस्कृति की गहराई तक पहुंचने के लिए हमें संस्कृत को अपनाना होगा। उन्होंने कहा कि वर्धा में स्थापित यह विश्वविद्यालय देश और दुनिया के लिए शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर रहा है। उन्होंने आश्वस्त किया कि इसके विकास के लिए हमेशा अग्रसर रहेंगे। श्रीनिवास वर्णेकर का कहना था कि नासा में भी संस्कृत का प्रयोग किया जा रहा है। विज्ञान को आगे बढ़ाने में इस भाषा का प्रयोग होगा एक अच्छा संकेत भी है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने कहा कि संस्कृत के प्रचार-प्रसार में इस प्रकार के आयोजन उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। दुनिया के करीब 10 देशों में भारत शास्त्र विभाग स्थापित है और इससे भारतीय साहित्य, संस्कृति और कलाओं का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। उन्होंने विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग

की उपलब्धि की चर्चा भी अपने संबोधन में की। कार्यक्रम का संचालन सविता आर्या ने किया तथा आभार लेखराम दन्ना ने माना। समापन पर परिचर्चा के दौरान विभिन्न प्रस्तुतियों में शामिल विद्यार्थियों का सम्मान किया गया



तथा शिक्षक एवं विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। परिचर्चा में वर्धा के स्कूल ऑफ स्कॉलर्स, न्यू इंग्लिश



स्कूल, रमाबाई देशमुख विद्यालय, महिला आश्रम, गांधी सिटी, सुशील हिंमतसिंह विद्यालय, सक्षम विद्यालय, आयुर्वेदिक महाविद्यालय, सावंगी, वर्धा आदि के शिक्षक एवं विद्यार्थी सहभागी हुए। समारोह में संस्कृत भारती के विदग्ध प्रांत के सहमंत्री संजीव लाभे, समाजसेवी मोहनबाबू अग्रवाल, दाते स्मृति संस्था के अध्यक्ष प्रदीप दाते, प्रा. स्मिता वानखेडे सहित संस्कृत विभाग के अध्यापक, वर्धा के विभिन्न शाला-महाविद्यालयों के विद्यार्थी उपस्थित थे।